



Nasib

17 Feb 1975

07:45 PM

Una

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 17/02/1975
दिन _____: सोमवार
जन्म समय _____: 19:45:00 घंटे
इष्ट _____: 31:38:43 घटी
स्थान _____: Una
राज्य _____: Himachal Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 31:28:00 उत्तर
रेखांश _____: 76:19:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:24:44 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 19:20:16 घंटे
वेलान्तर _____: -00:14:09 घंटे
साम्पातिक काल _____: 05:08:00 घंटे
सूर्योदय _____: 07:05:30 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:12:30 घंटे
दिनमान _____: 11:07:00 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शिशिर
सूर्य के अंश _____: 04:46:47 कुम्भ
लग्न के अंश _____: 25:18:05 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी _____: मेष - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: भरणी - 1
नक्षत्र स्वामी _____: शुक्र
योग _____: शुक्ल
करण _____: तैतिल
गण _____: मनुष्य
योनि _____: गज
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: ली-लीलाधर
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कुम्भ

Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1896	माघ	28
पंजाबी	संवत : 2031	फाल्गुन	6
बंगाली	सन् : 1381	फाल्गुन	4
तमिल	संवत : 2031	मासी	5
केरल	कोल्लम : 1150	कुंभम	5
नेपाली	संवत : 2031	फाल्गुन	5
चैत्रादि	संवत : 2031	माघ	शुक्ल 6
कार्तिकादि	संवत : 2031	माघ	शुक्ल 6

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 6
तिथि समाप्ति काल _____ : 24:03:11
जन्म तिथि _____ : 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : अश्विनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 17:01:28 घंटे
जन्म योग _____ : भरणी
सूर्योदय कालीन योग _____ : शुक्ल
योग समाप्ति काल _____ : 20:36:55 घंटे
जन्म योग _____ : शुक्ल
सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
करण समाप्ति काल _____ : 11:21:50 घंटे
जन्म करण _____ : तैतिल
भयात _____ : 06:48:49
भभोग _____ : 64:02:16
भोग्य दशा काल _____ : शुक्र 17 वर्ष 10 मा 22 दि

घात चक्र

मास _____ : कार्तिक
तिथि _____ : 1-6-11
दिन _____ : रविवार
नक्षत्र _____ : मघा
योग _____ : विष्कुम्भ
करण _____ : बव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : मेष
सूर्य _____ : कर्क
चन्द्र _____ : मेष
मंगल _____ : सिंह
बुध _____ : वृष
गुरु _____ : कन्या
शुक्र _____ : तुला
शनि _____ : मिथुन
राहु _____ : वृश्चिक

Acharya Surender KumarJoshi

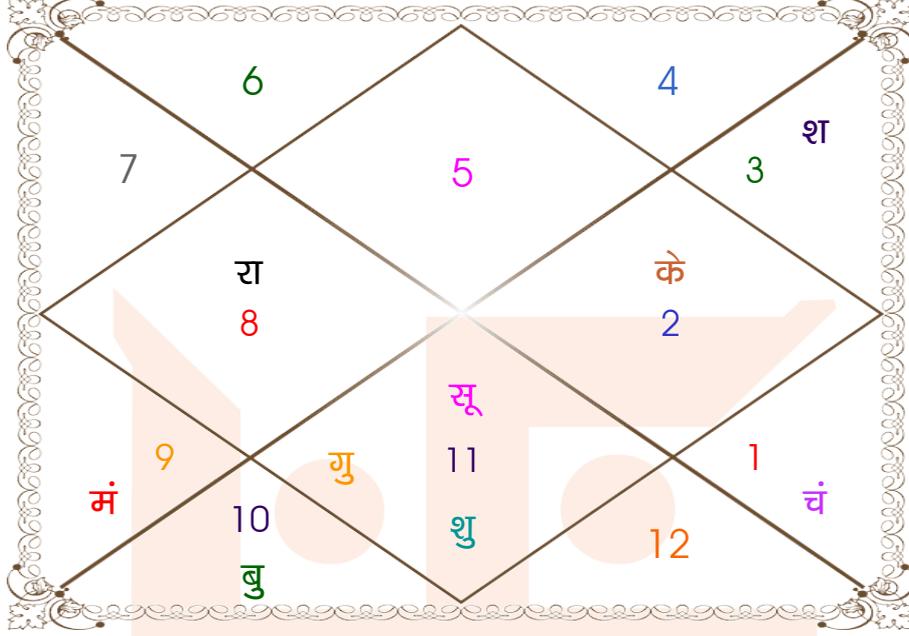
VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

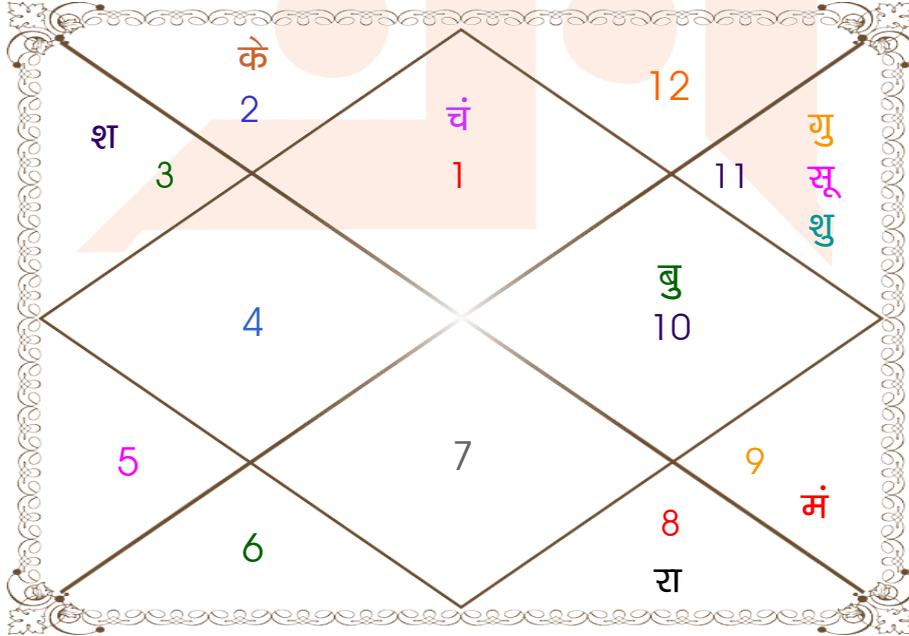
surenderjoshi70@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

	चं	के	श
शु सू गु			
बु			ल
मं	रा		

लग्न कुंडली

	के	चं	शु
श			सू गु
			बु
ल			मं
			रा

विंशोत्तरी
शुक्र 17वर्ष 10मा 22दि
शुक्र

17/02/1975

09/01/2093

शुक्र	09/01/1993
सूर्य	10/01/1999
चन्द्र	09/01/2009
मंगल	10/01/2016
राहु	09/01/2034
गुरु	09/01/2050
शनि	09/01/2069
बुध	09/01/2086
केतु	09/01/2093

योगिनी

भद्रिका 4वर्ष 5मा 20दि
सिद्धा

09/08/2021

09/08/2028

सिद्धा	19/12/2022
संकटा	09/07/2024
मंगला	18/09/2024
पिंगला	07/02/2025
धान्या	08/09/2025
भामरी	19/06/2026
भद्रिका	09/06/2027
उल्का	09/08/2028

Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

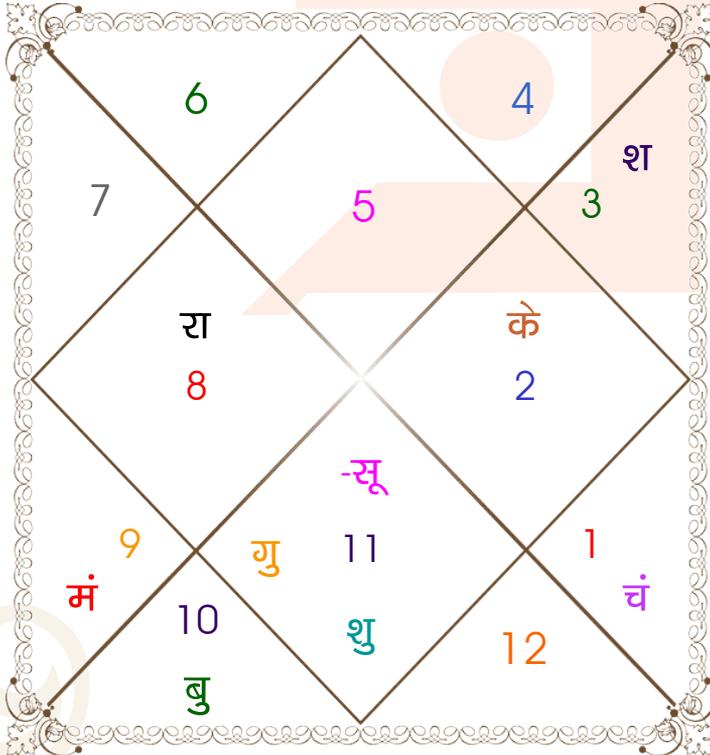
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	25:18:05	310:05:24	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	---
सूर्य			कुंभ	04:46:47	01:00:34	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	शुक्र	शत्रु राशि
चंद्र			मेष	14:44:14	12:22:40	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	शुक्र	सम राशि
मंगल			धनु	26:16:32	00:44:44	पूर्वाषाढा	4	20	गुरु	शुक्र	केतु	मित्र राशि
बुध	व		मक	17:04:13	00:23:46	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	शनि	सम राशि
गुरु			कुंभ	29:32:53	00:13:53	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	चंद्र	सम राशि
शुक्र			कुंभ	29:17:27	01:14:19	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	सूर्य	मित्र राशि
शनि	व		मिथु	18:59:23	00:02:39	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	चंद्र	मित्र राशि
राहु	व		वृश्चि	12:33:25	00:02:01	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	मंगल	शत्रु राशि
केतु	व		वृष	12:33:25	00:02:01	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	राहु	सम राशि
हर्ष	व		तुला	08:53:56	00:00:38	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	गुरु	---
नेप			वृश्चि	18:06:28	00:00:50	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	---
प्लूटो	व		कन्या	15:22:03	00:01:09	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	---
दशम भाव			वृष	24:31:47	--	मृगशिरा	--	5	शुक्र	मंगल	राहु	--

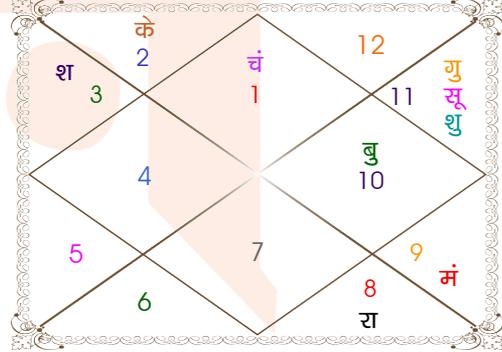
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:30:52

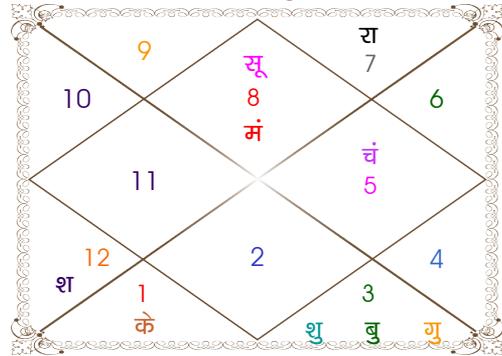
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	सिंह 10:10:22	सिंह 25:18:05
2	कन्या 10:10:22	कन्या 25:02:39
3	तुला 09:54:56	तुला 24:47:13
4	वृश्चिक 09:39:30	वृश्चिक 24:31:47
5	धनु 09:39:30	धनु 24:47:13
6	मकर 09:54:56	मकर 25:02:39
7	कुम्भ 10:10:22	कुम्भ 25:18:05
8	मीन 10:10:22	मीन 25:02:39
9	मेष 09:54:56	मेष 24:47:13
10	वृष 09:39:30	वृष 24:31:47
11	मिथुन 09:39:30	मिथुन 24:47:13
12	कर्क 09:54:56	कर्क 25:02:39

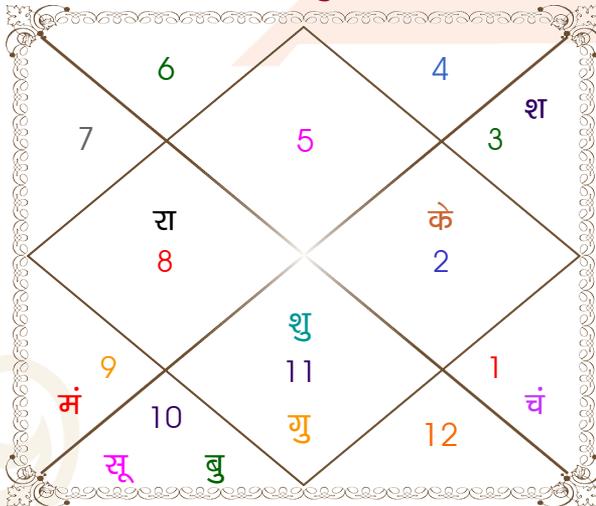
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	25:18:05
2	कन्या	22:11:38
3	तुला	22:26:52
4	वृश्चिक	24:31:47
5	धनु	26:35:56
6	मकर	27:12:14
7	कुम्भ	25:18:05
8	मीन	22:11:38
9	मेष	22:26:52
10	वृष	24:31:47
11	मिथुन	26:35:56
12	कर्क	27:12:14

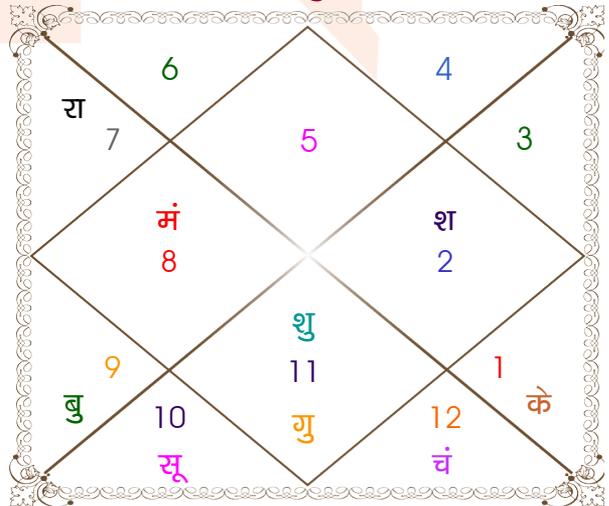
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उभाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 17 वर्ष 10 मास 22 दिन

शुक्र 20 वर्ष 17/02/1975 09/01/1993	सूर्य 6 वर्ष 09/01/1993 10/01/1999	चंद्र 10 वर्ष 10/01/1999 09/01/2009	मंगल 7 वर्ष 09/01/2009 10/01/2016	राहु 18 वर्ष 10/01/2016 09/01/2034
शुक्र 11/05/1976	सूर्य 29/04/1993	चंद्र 10/11/1999	मंगल 07/06/2009	राहु 22/09/2018
सूर्य 11/05/1977	चंद्र 28/10/1993	मंगल 10/06/2000	राहु 26/06/2010	गुरु 15/02/2021
चंद्र 10/01/1979	मंगल 05/03/1994	राहु 10/12/2001	गुरु 02/06/2011	शनि 23/12/2023
मंगल 11/03/1980	राहु 28/01/1995	गुरु 11/04/2003	शनि 10/07/2012	बुध 11/07/2026
राहु 11/03/1983	गुरु 16/11/1995	शनि 09/11/2004	बुध 08/07/2013	केतु 29/07/2027
गुरु 09/11/1985	शनि 28/10/1996	बुध 11/04/2006	केतु 04/12/2013	शुक्र 29/07/2030
शनि 09/01/1989	बुध 04/09/1997	केतु 10/11/2006	शुक्र 03/02/2015	सूर्य 23/06/2031
बुध 10/11/1991	केतु 09/01/1998	शुक्र 10/07/2008	सूर्य 11/06/2015	चंद्र 22/12/2032
केतु 09/01/1993	शुक्र 10/01/1999	सूर्य 09/01/2009	चंद्र 10/01/2016	मंगल 09/01/2034

गुरु 16 वर्ष 09/01/2034 09/01/2050	शनि 19 वर्ष 09/01/2050 09/01/2069	बुध 17 वर्ष 09/01/2069 09/01/2086	केतु 7 वर्ष 09/01/2086 09/01/2093	शुक्र 20 वर्ष 09/01/2093 00/00/0000
गुरु 28/02/2036	शनि 12/01/2053	बुध 08/06/2071	केतु 07/06/2086	शुक्र 17/02/2095
शनि 10/09/2038	बुध 22/09/2055	केतु 04/06/2072	शुक्र 08/08/2087	00/00/0000
बुध 16/12/2040	केतु 31/10/2056	शुक्र 05/04/2075	सूर्य 13/12/2087	00/00/0000
केतु 22/11/2041	शुक्र 01/01/2060	सूर्य 09/02/2076	चंद्र 14/07/2088	00/00/0000
शुक्र 23/07/2044	सूर्य 13/12/2060	चंद्र 11/07/2077	मंगल 10/12/2088	00/00/0000
सूर्य 11/05/2045	चंद्र 14/07/2062	मंगल 08/07/2078	राहु 28/12/2089	00/00/0000
चंद्र 10/09/2046	मंगल 23/08/2063	राहु 24/01/2081	गुरु 04/12/2090	00/00/0000
मंगल 17/08/2047	राहु 29/06/2066	गुरु 02/05/2083	शनि 13/01/2092	00/00/0000
राहु 09/01/2050	गुरु 09/01/2069	शनि 09/01/2086	बुध 09/01/2093	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 17 वर्ष 10 मा 14 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Acharya Surender Kumar Joshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - बुध 23/12/2023 11/07/2026	राहु - केतु 11/07/2026 29/07/2027	राहु - शुक्र 29/07/2027 29/07/2030	राहु - सूर्य 29/07/2030 23/06/2031	राहु - चंद्र 23/06/2031 22/12/2032
बुध 03/05/2024 केतु 26/06/2024 शुक्र 28/11/2024 सूर्य 14/01/2025 चंद्र 01/04/2025 मंगल 26/05/2025 राहु 12/10/2025 गुरु 14/02/2026 शनि 11/07/2026	केतु 02/08/2026 शुक्र 05/10/2026 सूर्य 24/10/2026 चंद्र 25/11/2026 मंगल 18/12/2026 राहु 13/02/2027 गुरु 05/04/2027 शनि 05/06/2027 बुध 29/07/2027	शुक्र 28/01/2028 सूर्य 23/03/2028 चंद्र 22/06/2028 मंगल 25/08/2028 राहु 05/02/2029 गुरु 02/07/2029 शनि 22/12/2029 बुध 26/05/2030 केतु 29/07/2030	सूर्य 15/08/2030 चंद्र 11/09/2030 मंगल 30/09/2030 राहु 19/11/2030 गुरु 01/01/2031 शनि 22/02/2031 बुध 10/04/2031 केतु 29/04/2031 शुक्र 23/06/2031	चंद्र 08/08/2031 मंगल 09/09/2031 राहु 30/11/2031 गुरु 11/02/2032 शनि 08/05/2032 बुध 24/07/2032 केतु 25/08/2032 शुक्र 24/11/2032 सूर्य 22/12/2032
राहु - मंगल 22/12/2032 09/01/2034	गुरु - गुरु 09/01/2034 28/02/2036	गुरु - शनि 28/02/2036 10/09/2038	गुरु - बुध 10/09/2038 16/12/2040	गुरु - केतु 16/12/2040 22/11/2041
मंगल 13/01/2033 राहु 12/03/2033 गुरु 02/05/2033 शनि 02/07/2033 बुध 25/08/2033 केतु 16/09/2033 शुक्र 19/11/2033 सूर्य 08/12/2033 चंद्र 09/01/2034	गुरु 23/04/2034 शनि 25/08/2034 बुध 13/12/2034 केतु 27/01/2035 शुक्र 06/06/2035 सूर्य 15/07/2035 चंद्र 18/09/2035 मंगल 03/11/2035 राहु 28/02/2036	शनि 23/07/2036 बुध 01/12/2036 केतु 24/01/2037 शुक्र 27/06/2037 सूर्य 13/08/2037 चंद्र 29/10/2037 मंगल 22/12/2037 राहु 09/05/2038 गुरु 10/09/2038	बुध 05/01/2039 केतु 22/02/2039 शुक्र 10/07/2039 सूर्य 21/08/2039 चंद्र 29/10/2039 मंगल 16/12/2039 राहु 18/04/2040 गुरु 07/08/2040 शनि 16/12/2040	केतु 05/01/2041 शुक्र 02/03/2041 सूर्य 19/03/2041 चंद्र 17/04/2041 मंगल 07/05/2041 राहु 27/06/2041 गुरु 11/08/2041 शनि 04/10/2041 बुध 22/11/2041
गुरु - शुक्र 22/11/2041 23/07/2044	गुरु - सूर्य 23/07/2044 11/05/2045	गुरु - चंद्र 11/05/2045 10/09/2046	गुरु - मंगल 10/09/2046 17/08/2047	गुरु - राहु 17/08/2047 09/01/2050
शुक्र 03/05/2042 सूर्य 21/06/2042 चंद्र 10/09/2042 मंगल 06/11/2042 राहु 01/04/2043 गुरु 09/08/2043 शनि 10/01/2044 बुध 27/05/2044 केतु 23/07/2044	सूर्य 06/08/2044 चंद्र 31/08/2044 मंगल 17/09/2044 राहु 30/10/2044 गुरु 08/12/2044 शनि 24/01/2045 बुध 06/03/2045 केतु 23/03/2045 शुक्र 11/05/2045	चंद्र 20/06/2045 मंगल 19/07/2045 राहु 30/09/2045 गुरु 04/12/2045 शनि 19/02/2046 बुध 29/04/2046 केतु 27/05/2046 शुक्र 16/08/2046 सूर्य 10/09/2046	मंगल 30/09/2046 राहु 20/11/2046 गुरु 04/01/2047 शनि 27/02/2047 बुध 17/04/2047 केतु 06/05/2047 शुक्र 02/07/2047 सूर्य 19/07/2047 चंद्र 17/08/2047	राहु 26/12/2047 गुरु 21/04/2048 शनि 07/09/2048 बुध 09/01/2049 केतु 01/03/2049 शुक्र 25/07/2049 सूर्य 07/09/2049 चंद्र 19/11/2049 मंगल 09/01/2050

Acharya Surender Kumar Joshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	8
भाग्यांक	5
मित्र अंक	1, 2, 8, 5
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहूँ
दान द्रव्य	घी

Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

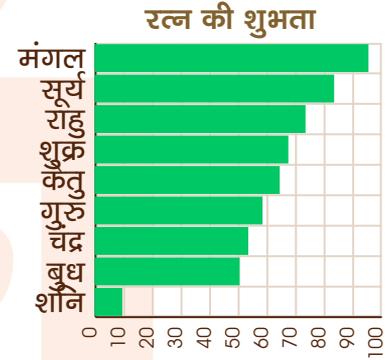
surenderjoshi70@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	95%	सन्तति सुख, भाग्योदय, सुख
माणिक्य	सूर्य	83%	दम्पति, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	73%	सुख, सन्तति सुख
हीरा	शुक्र	67%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
लहसुनिया	केतु	64%	व्यावसायिक उन्नति, दम्पति
पुखराज	गुरु	58%	दम्पति, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
मोती	चंद्र	53%	भाग्योदय, कम खर्च
पन्ना	बुध	50%	शत्रु व रोग मुक्ति, धनार्जन, धन
नीलम	शनि	9%	हानि, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	09/01/1993	70%	31%	95%	56%	58%	80%	22%	80%	70%
सूर्य	10/01/1999	95%	59%	100%	50%	64%	55%	0%	61%	52%
चंद्र	09/01/2009	89%	66%	95%	56%	58%	67%	9%	61%	52%
मंगल	10/01/2016	89%	59%	100%	25%	64%	67%	9%	61%	70%
राहु	09/01/2034	70%	31%	83%	50%	58%	73%	22%	86%	52%
गुरु	09/01/2050	89%	59%	100%	25%	70%	55%	9%	73%	64%
शनि	09/01/2069	70%	31%	83%	56%	58%	73%	34%	80%	52%
बुध	09/01/2086	89%	31%	95%	62%	58%	73%	9%	73%	64%
केतु	09/01/2093	70%	31%	100%	50%	58%	73%	0%	61%	77%

Acharya Surender Kumar Joshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/1975-07/09/1977	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	-----

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया

फल

अशुभ
अशुभ
अशुभ
सम
शुभ

क्षेत्र

व्यय
सुख हानि
दुर्घटना से बचाव
बदनामी
व्यावसायिक उन्नति

Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति पंचम भाव में है। पंचम भाव संतति उच्चशिक्षा तथा बुद्धि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आप पुत्र संतति से युक्त रहेंगे तथा उनसे आपको जीवन में यथोचित सुख की प्राप्ति होगी लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। जीवन में आप स्वपरिश्रम एवं बुद्धिबल से उच्च शिक्षा अर्जित करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे यद्यपि इसमें यदा कदा समस्याएं भी उत्पन्न होंगी परन्तु इनका सामना करने में आप सफल रहेंगे। आपकी तीव्र बुद्धि होगी तथा यदा कदा उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। आपकी प्रवृत्ति किसी भी कार्य को शीघ्रता से प्रारंभ करने की रहेगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके संबंध बने रहेंगे तथा उनसे न्यूनाधिक लाभ एवं सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

पंचम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ दृष्टि अष्टम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप गर्मी पित या रक्त विकार आदि से यदा कदा शारीरिक कष्ट प्राप्त कर सकते हैं परन्तु इसके प्रभाव से आपको विशिष्ट या अचानक धन लाभ का भी जीवन में योग बनता है। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों में भी यदा कदा आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा लेकिन उनका समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए शुभ रहेगी इसके प्रभाव से आप जीवन में प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करेंगे तथा धनवान पुरुष के रूप में जाने जाएंगे। आपके आय स्रोत भी एक से अधिक होंगे तथा सामाजिक मान सम्मान की भी वृद्धि होगी। द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आप यदा कदा व्यय अधिक मात्रा में करेंगे जो शुभाशुभ कार्यों में होगा। इससे आपके बाएं नेत्र में कोई निशान या कमजोरी भी हो सकती है। लेकिन दाम्पत्य जीवन का उपभोग आप सामान्यतया प्रसन्नता पूर्वक करते रहेंगे।

इस प्रकार पंचम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आप जीवन में संतति तथा अन्य

Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे तथा न्यूनाधिक समस्याओं का सामना करते हुए अपने दाम्पत्य जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।



Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शंखपाल नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्ण रूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। परिणामस्वरूप घर-द्वार जमीन-जायदाद, चल-अचल सम्बन्धी वस्तुओं पर थोड़ा बहुत कठिनाईयाँ आती हैं और उससे जातक को बेवजह चिन्ता कभी-कभी घेर लेती है तथा विद्या प्राप्ति में आंशिक रूप से तकलीफ उठानी पड़ती है।

माता से कोई न कोई किसी समय आंशिक रूप में तकलीफ मिलती है। सवारी एवं नौकरों से भी कोई न कोई परेशानियाँ उपस्थित होती रहती हैं। जिसमें थोड़ा बहुत नुकसान उठाने पड़ते हैं। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी तनावग्रस्त हो जाता है। चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जातक समय-समय मानसिक रूप से परेशान रहता है। कार्य के क्षेत्र में अनेक विघ्न आते हैं। पर वे सब विघ्न कालान्तर में स्वतः नष्ट हो जाते हैं। बहुत सारे कामों को एक साथ करने के कारण कोई भी काम प्रायः पूरा नहीं हो पाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का आर्थिक संतुलन थोड़ा बहुत बिगड़ जाता है, जिस कारण आर्थिक संकट उपस्थित हो जाता है। लेकिन इतना सब कुछ हो जाने के बाद भी जातक के व्यवसाय, नौकरी तथा राजनीति के क्षेत्र में बहुत सफलताएँ प्राप्त होती हैं एवं सामाजिक पद प्रतिष्ठा भी मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में मंगल के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

ग्रह फल

सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, कोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील, धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन ,आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरों से सहमत ही रहेंगे।

Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

इस प्रकार आप एक दूसरों के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

शुक्र

सप्तमभाव में शुक्र हो तो जातक लोकप्रिय, धनिक, चिन्तित, विवाह के बाद भाग्योदय, साधुप्रेमी, स्त्री से सुख, कामी, भाग्यवान् गानप्रिय, विलासी, अल्पव्यभिचारी चंचल एवं उदार होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान्, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

मिथुन राशि में शनि हो तो जातक दुराचारी, कपटी, कामी, पाखण्डी, निर्धन, दुःखी एवं संकीर्ण मन वाला होता है।

राहु

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं क्रूर होता है।

वृश्चिक राशि में राहु हो तो जातक धूर्त, निर्धन, रोगी, धननाशक, अनैतिक चरित्र एवं धोखेबाज होता है।

केतु

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

वृष राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, निरुद्यमी, आलसी, वाचाल एवं कामुक होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(10/01/2016 - 09/01/2034)

राहु की महादशा 10/01/2016 को आरम्भ होकर 09/01/2034 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्म कुण्डली में राहु चतुर्थ भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि दशम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको यश, ख्याति, जीविका में प्रगति और समृद्धि की प्राप्ति होगी। राहु की इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति और लाभ की प्राप्ति, अचल सम्पत्ति तथा सुख में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्तिशाली होंगे। एक सन्तुलित जीवन के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मौसम में परिवर्तन के फलस्वरूप चर्मरोग, पाचन-समस्या, हृदय संबंधी समस्या, विषाणुजन्य संक्रामक रोग आदि हो सकता है। थोड़ी सावधानी से इन रोगों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। आपको सभी भौतिक सुख मिलेंगे। आपको माता से लाभ मिल सकता है। आपको जहाँ तक सम्भव हो सके से बचना चाहिए। व्यावसायिक उपार्जन, व्यापार से आय अच्छी होगी। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि के क्षेत्र, विमान उड्डयन, विमान-चालन, कला, सम्पर्क-कार्य, कम्प्यूटर, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, व्यापार आदि का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, दवा, चमड़ा, एण्टी-बायोटिक दवा, प्लास्टिक, रबड़ आदि का व्यापार लाभप्रद हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की आय में वृद्धि, सम्मान, वरिष्ठ कर्मचारियों के अनुग्रह तथा वांछित लक्ष्य की प्राप्ति होगी। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को साझेदारों से लाभ, व्यापार में सफलता, विदेश यात्रा, आय में वृद्धि और उपार्जन होगा। जीविका में प्राप्ति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

इस दशा के दौरान आपको सभी भौतिक समृद्धि मिलेगी और सुखों में वृद्धि होगी। आप अपना आवास परिवर्तित कर सकते हैं। इस दशा में आपको चल सम्पत्ति, जमीन-जायदाद की प्राप्ति हो सकती है। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी व दूर की यात्रा होगी। छोटी यात्रा में सम्भावित नुकसान से बचने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए।

शिक्षा :

आपकी बुनियादी शिक्षा उत्तम होगी। उच्च शिक्षा के लिए आप अपनी संस्था में परिवर्तन कर सकते हैं। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आप कठिन परिश्रम करेंगे। दशा की प्रगति के साथ स्थिति में सुधार आएगा। विज्ञान, कला, कम्प्यूटर-विज्ञान, व्यापार आदि में आपकी रुचि हो सकती है। आपकी इच्छा शक्ति मजबूत है, आप स्वभाव से स्वतंत्र हैं और अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे।

Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

परिवार :

आपके बच्चों के जीवन में कुछ परिवर्तन होगा और उन्हें आपकी सहायता तथा मार्गदर्शन की आवश्यकता हो सकती है। आपका आपके जीवनसाथी के साथ संबंध सन्तोषजनक रहेगा। आपकी माता की सम्पत्ति में वृद्धि होगी, आर्थिक-समृद्धि की प्राप्ति होगी और उन्हें स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतनी होगी। आपके पिता की यात्रा, अचानक लाभ की प्राप्ति तथा आध्यात्मिक विकास होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को अचानक धन-लाभ और जीवन का सुख मिलेगा जबकि बड़े भाई-बहनों को प्रतिद्वंद्वियों पर विजय और भौतिक समृद्धि की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपको सुख, अचल सम्पत्ति की प्राप्ति तथा लाभ मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा भाग्यशाली सिद्ध होगी यद्यपि प्रतिद्वन्द्वियों के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शनि की अन्तर्दशा कष्टकारक सिद्ध हो सकती है किन्तु, भौतिक कला व यात्रा का अवसर प्रदान करेगी। बुध की अन्तर्दशा छोटे भाई-बहनों के लिए सहायक होगी और इसके फलस्वरूप उनको यात्रा और व्यय होगा। केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्याएं हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर दशा के फलस्वरूप लाभ और सम्पत्ति में वृद्धि होगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के कारण पारिवारिक सुख मिलेगा और सम्पत्ति में वृद्धि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी जबकि योगकारक मंगल के कारण सुख की प्राप्ति, बच्चे का जन्म और जीविका में प्रगति होगी।

Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

**अंतर्दशा :- राहु - बुध
(23/12/2023 - 11/07/2026)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/01/2016 को प्रारंभ होकर 09/01/2034 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 23/12/2023 को प्रारंभ होकर 11/07/2026 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठे भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। छठे भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के द्वादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस दशा की अवधि में आपकी वाणी कटु हो सकती है, आलस्य की भावना हो सकती है। शिक्षा में बाधा आ सकती है। आप झगड़ालू और दिखावापसंद हो सकते हैं। शत्रुओं की संख्या में वृद्धि हो सकती है। आपका व्यवहार उत्तेजनापूर्ण हो सकता है, इस कारण कोई स्नायविक या मानसिक व्याधि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु - केतु
(11/07/2026 - 29/07/2027)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/01/2016 को प्रारंभ होकर 09/01/2034 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 11/07/2026 को प्रारंभ होकर 29/07/2027 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान, जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

राहु और केतु छाया ग्रह हैं। इनकी स्वयं की कोई राशि नहीं होती। सामान्यतः इन्हें अशुभ समझा जाता है परंतु वास्तव में वे शुभ या अशुभ कुंडली में अपनी स्थिति के अनुसार होते हैं।

इस अवधि में आप साहसी, शक्तिशाली और प्रसिद्ध बनेंगे मगर पापकर्म में भी रुचि हो सकती है। इस कारण कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं। आप प्रसन्नचित्त और धार्मिक होंगे। तीर्थयात्राएं हो सकती हैं। समाजसेवा करेंगे, गरीबों की मदद करेंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72,000 जाप करें।

Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

**अंतर्दशा :- राहु - शुक्र
(29/07/2027 - 29/07/2030)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/01/2016 को प्रारंभ होकर 09/01/2034 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 29/07/2027 को प्रारंभ होकर 29/07/2030 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव, लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। सप्तम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी विषय-वासनाओं में रुचि हो सकती है। आपका व्यक्तित्व आकर्षक हो सकता है मगर आपकी दिलचस्पी मौज-मस्ती और सुरापान में हो सकती है। आपके बहुत से मित्र होंगे, लोकप्रिय बनेंगे। विवाहेतर संबंध हो सकते हैं, जिस कारण कोई गुप्त रोग पनप सकता है। विपरीत लिंग के व्यक्ति के साथ साझेदारी वाले व्यापार में लाभ हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें
- चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं
- भोजन के समय पहली रोटी गाय को खिलाएं

**अंतर्दशा :- राहु - सूर्य
(29/07/2030 - 23/06/2031)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/01/2016 को प्रारंभ होकर 09/01/2034 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 29/07/2030 को प्रारंभ होकर 23/06/2031 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। सप्तम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप सरकारी अधिकारियों के कोप के कारण अपमानित हो सकते हैं। यात्राओं के शौकीन होंगे। चरित्र में गिरावट आ सकती है। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संपर्क के कारण बदनामी हो सकती है। प्रत्येक के साथ आप न्याय और बराबरी का व्यवहार करना पसंद करेंगे। इस कारण मित्रों की संख्या में कमी आ सकती है। दुर्घटना या चोट से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 7 रत्ती का माणिक सोने या चांदी की अंगूठी में रविवार के दिन प्रातःकाल, सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य की उपासना के बाद दायें हाथ की अनामिका में धारण करें।



Acharya Surender KumarJoshi

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com